AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2022
Impact Factor:6.3
Subject: Humanties

हिंदी साहित्य में नारी चेतना

डॉ रेखा रानी
सहायक प्राध्यापक
आईबी पीजी कॉलेज पानीपत

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FORPUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES,THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENTFROM THE JOURNALWEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITHNO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सारांश

नारी प्रकृति रूपा है, प्रकृति परमपुरुष की इच्छा का प्रतिफलन है। प्रसिद्ध है कि जगन्नियंता को जब एकाकी रमने में कुछ ऊब सी हुई तो वे स्वकीय इच्छा-शक्ति से एक से दो हो गए। उस तरह से प्रकृति की सुरुचिपूर्ण रमण सृष्टि है। वह पुरुष की पूरक है। उसे आदिकाल से ही समस्त सृष्टि की संचालिका शक्ति माना जाता है। नारी के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। नारी के संयोग से ही संसार आगे बढ़ता है। नारी हमेशा से ही पुरुष की प्रेरणा रही है। नारी का शारीरिक सौन्दर्य अगर पुरुष को लुभाता है, इसकी शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति करता है तो नारी का आत्मिक सौन्दर्य पुरुष के कार्यों की प्रेरणा भी बनता है। नारी पुरुष को निराशा के क्षणों में आशा देती है, दुःख में दिलासा देती है और उसके कर्म में उत्साह भरती है। नारी प्रत्येक शब्द का इतिहास है। उसका स्वतन्त्र अस्तित्व है। शब्द अपने वाच्य के स्वरूप का भी संकेत करता है। नारी अर्थ के बोधक शब्द भी नारी के स्वरूप पर बहुत प्रकाश डालते हैं। कवियों की दृष्टि में नारी माया-सी, दुर्बोध, प्रकृति-सी बहुरूपी, साथ ही सहानुभूति-सी सरल रही है। यदि शब्दों के विकास के साथ मानव सभ्यता के विकास का अध्ययन किया जाए तो जान पड़ेगा कि नारी उतने ही अंश में रहस्यमयी है, जितने अंश में संसार की कोई भी वस्तु। विषम समाज में विषम स्थिति होने के कारण नारी के विभिन्न स्वरूप होते गए।

परिचय

मानव को नारी के साथ शारीरिक, रागात्मक और धार्मिक सम्बन्ध होने के कारण नारी के स्वरूप-भेद हुए। ये भेद प्रभेद इतने जटिल बन गए है, कि आज शब्द के आधार पर नारी के वास्तविक स्वरूप को समझना कठिन है। किसी एक शब्द से नारी के स्वरूप की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। फिर भी, जिस तरह एक छोटे से ओस-बिन्दु में सम्पूर्ण सूर्यमण्डल प्रतिबिम्बित हो जाता है, उसी प्रकार नारी-वाचक छोटे-से-छोटे शब्द में

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2022
Impact Factor:6.3
Subject: Humanties

भी उसकी जाति, उसके गुण, उसकी क्रिया अथवा इच्छा झलक जाती है। साथ ही नाम रखने वाले समाज की मानसिक स्थिति, बौद्धिक उन्नति और सांस्कृतिक चेतना भी व्यक्त हो जाती है। प्राणी जगत में 'नारी' शब्द 'नर' के समानान्तर है। इसका प्रयोग स्त्रीलिंग वाची मादा प्राणियों के रूप में होता है किन्तु मानव समाज में 'नारी' शब्द इस सामान्य अर्थ में गृहीत नहीं है, क्योंकि उसका स्थान नर से कहीं बढ़कर है। यही नहीं, रूप-आकार, शरीर संगठन, कार्य-व्यापार एवं जीवन-यापन की विविध स्थितियों में नारी विधाता की उच्चतम परिकल्पना सिद्ध हुई है फिर भी नारी की परिभाषा और स्वरूप को अच्छी तरह जानने के लिए 'नारी' शब्द की व्युत्पत्ति को जानना बहुत आवश्यक है। 'नारी शब्द नृ अथवा नर' से बना है।

नृ +घीष=नारी-नरस्य समान धर्मा नारी,

नारी शब्द नर से उत्पन्न माना जाता है। 'यास्क ने 'नर' शब्द को नृत से बनाया है-नराः नृत्यन्ति कर्मसु' अर्थात् काम की पूर्ति के लिए मनुष्य हाथ पैर नचाता है। नारी के लिए स्त्री शब्द का प्रयोग भी होता है। यह शब्द उसे पुरुष के लैंगिक सहयोगी के रूप में स्त्री की व्युत्पत्ति के विषय में निरुक्तकार का मत है कि स्त्री शब्द स्त्रयै धातु से बना है। यास्क के मतानुसार स्त्यै का अर्थ लज्जा से सिकुड़ना है। टीकाकार दुर्गाचार्य नारी की 'स्त्री' संज्ञा उसके लज्जाशील होने के कारण मानता है किन्तु पाणिनी के धातु पाठ में 'स्त्रयै' का अर्थ लजाना नहीं मिलता। धातुपाठ के अनुसार 'स्त्रयै' शब्द का अर्थ है 'शब्द करना' तथा इक्ट्ठा करना। जान पड़ता है कि नारी का स्त्री नाम सम्भवतः उसके वाचाल होने के कारण ही पड़ा। महर्षि पंतजलि ने अपनी 'अष्टाध्यायी' में समझाया है कि नारी को स्त्री इसलिए कहते हैं कि गर्भ की स्थिति उसके भीतर रहती है। उन्होंने एक दूसरी व्युत्पत्ति भी की है- श् गंध-इन सब का समुच्चय ही स्त्री है। इससे स्पष्ट है कि नारी शब्द की व्युत्पत्ति अनेकशब्दों से मानी गयी है।

नारी के पर्यायवाची शब्द:-

वैदिक साहित्य में नारी के लिए निम्नलिखित पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग हुआ है।

1- निरुक्त में कहा है, मानयन्ति एनाः पुरुषाःय्। पुरुष उसका सम्मान करते हैं अतः उसे

मेना कहा गया है।

2- नारी नर की सहयोगिनी है अतः उसे 'योषा' कहा गया है।

3- वह सौन्दर्य को बिखेरती है-वयति सौन्दर्यम्। अतः उसे वामा कहा गया है।

ISSN:2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2022
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanties

4- नारी पुरुष के मन को आनन्दित करती है अतः वह 'प्रमदा' है। शब्द स्पर्श-रूप सगंधाना गुणानां स्त्रयानं-संधातम-स्त्री' अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और वह काम्या होने से 'कामिनी' रम्या होने से 'रमणी' सन्तति उत्पन्न करने के कारण 'जननी', 'जाया' और तेजस्विनी होने के कारण 'भामा' कहलाती है।

6- माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री आदि सभी रूपों में पूजनीय होने के कारण उसे 'महिला' कहा गया है।

7- 'पति द्वारा उसका भरण-पोषण होता है अतः वह 'भार्या' कहलाती है।'

स्त्री को ललना इसलिए कहते है कि यह मानसिक भाव की द्योतक है। यह लल=इच्छा करना से बना है। स्त्री में लालसा, इच्छा, चाह प्रबल होती है। अतः उसे ललना कहते हैं। नारी को 'महिला'-
मह+इलय+आ=महिला। मह का अर्थ पूजा है। 'पूज्य होने के कारण स्त्री का नाम महिला पड़ा। वह नारी जो क्रोध करने वाली हो वह 'कोपना', जिसमें क्रोध (भाम) अधिक रहता हो वह 'भामिनी', जो क्रोध और आवेश में भयंकर रूप धारण करे वह 'चण्डी', जो नशे के कारण उन्मत-सी दिखाई दे वह 'मतकाशिनी', 'जिसका राजा में पूजनीय हो, वह 'महिषी', जो केवल भोग के लिए हो वह भोगिनी और जो पुरुष के सभी धर्मों में साथ दें वह सहधर्मिणी कहलाती है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि नारी के पर्यायवाची शब्दों में 'स्त्री, योषित, अबला, योषा, वामा, वनिता, महिला, भीरू, कामिनी, प्रमदा, मानिनी, कान्ता, ललना, सुन्दरी, रमणी, भामिनी, चण्डी, भोगिनी, पत्नी, सहधर्मिणी, भार्या, स्वयंवरा, कुलपालिका' आदि प्रमुख है। इस प्रकार नारी अपने प्रत्येक पर्याय को सार्थक सिद्ध करती है। नारी के बारे में प्रयुक्त होने वाला प्रत्येक शब्द नारी के किसी-न-किसी गुण अथवा उसकी विशेषता का द्योतक है। नारी: भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के मत: भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने नारी के सम्बन्ध में अपने भिन्न-भिन्न मत दिए हैं। उनमें से कुछ विद्वानों के मत इस प्रकार है-

भारतीय विद्वानों के मत:-

1- प्रेमचन्द जी के मतानुसार:-
   'पुरुष विकास के क्रम में नारी के पीछे पीछे है। जिस दिन वह भी पूर्ण विकास तक पहुंचेगा। वह स्त्री हो जाएगा। वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया इन्हीं आधारों पर सृष्टि थमी हुई है और ये स्त्रियों के गुण है।'
2- स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार:-

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2022
Impact Factor:6.3
Subject: Humanties

नारी पूजन से ही समाज की प्रगति होती है। जिस देश अथवा समाज में स्त्री पूजन नहीं होता वह देश अथवा समाज कभी ऊँचा नहीं उठ सकता। पश्चिमी देशों के अधःपतन का कारण उन्होंने शक्तिरूपिणी स्त्री की अवहेलना माना है।

3- महादेवी वर्मा के अनुसार:-
पुरुष प्रतिशोधमय शोध है, स्त्री क्षमा। पुरुष शुष्क कर्त्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति। पुरुष ब्रह्मा है तो स्त्री हृदय की प्रेरणा।

4- डॉ॰ राधाकृष्णन के अनुसार:-
एक पशु जिसका प्रशिक्षण नारी करती है। नारी मूलतः पुरुष की शिक्षिका है, तब भी जब वह बच्चा होता है और तब भी जब वह व्यस्क होता है।

5- डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है:
कहीं अपने आपको उत्सर्ग करने की, अपने आपको खपा देने की भावना प्रधान है, वहीं नारी है।

पाश्चात्य विद्वानों के मत:-

1- मैगडूगल और फलूगल के अनुसार:-
फ्मनोविज्ञान के अनुसार ही पुरुष की अपेक्षा वात्सल्य भाव की मात्र स्त्री में अधिक होती है।

2- ए॰एस॰ अल्टेकर के अनुसार:
फ्नारी सुकुमार, परिश्रमी, कोमल और पराधीन है। उसकी चरम महता गृहिणी रूप में और मातृत्व के विकास में ही है। वह प्रेम करने के लिए बनी है। नारी कवयित्री, दार्शनिक दिग्गज, विदुषी ब्रह्मवादिनी हो सकती है किन्तु अपने युग की प्रतिक्रियावादी परम्पराओं में पोषित न होने के कारण संस्कृत काव्याकारों ने भी उसका सभा में वाक्चातुर्य, प्रतिभा-प्रदर्शन नहंी दिखलाया है।

भारतीय कवियों के मत:-

प्राचीन और नवीन भारतीय कवियों ने भी नारी के सम्बन्ध में अपने अलग-अलग विचार व्यक्त किए हैं। जो इस प्रकार है-

1- कबीर के अनुसार -
‘पतिवरता मैली भली काली कुचिर कुरूप , पतिवरता के रूप पर वारौ कोटी सरूप।’

2- तुलसी के अनुसार -
‘जिन प्रतिबिम्ब बसउ गहि जाई, ‘जानि न जाई नारि गति भाई।’

ISSN:2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2022
Impact Factor:6.3
Subject: Humanties

3- मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार -

'अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी। आंचल में है दूध और आंखों में पानी।

4.जयशंकर प्रसाद के अनुसार -

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।

पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।

5- बिहारी के अनुसार -

'ज्यों ज्यों पाषक लपट सी, पिहयो सौ लपटाति। त्यों त्यों छही गुलाब सौ, छतियाँ अति सियराति। नारी सम्पूर्णता का दूसरा पहलू है। वह न केवल पुरुष को पूर्णता प्रदान करती है बल्कि दुनिया का आधा प्रतिनिधित्व भी उसके हाथों में है। अनादिकाल से नारी पूजनीय रही है। इसीलिए पुरुष को यदि शिव का प्रतिरूप माना गया तो नारी को शक्ति का। इस सृष्टि की सुन्दरतम कृति नारी ही है। इसलिए उसको सृष्टि की साधना और प्रकृति का मूर्त रूप माना गया है, किन्तु सामाजिक परिस्थितियों के चलते वैदिक काल के बाद नारी को निम्न दृष्टि से देखा जाने लगा और रीतिकाल आते-आते नारी एक उपभोग की वस्तु बनकर रह गई। नारी का जितना शोषण पिछले 50-55 वर्षों में हुआ है, वह नारी के प्रति विकृत मानसिकता का ही पर्याय है। परन्तु फिर भी नारी की उत्पत्ति ही पुरुष के अस्तित्व की पहचान है। नारी ही वह चेतनाप्रद शक्ति है जो सृष्टि संरचना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- डॉ॰ इन्द्रनाथ मदान, आधुनिक कविता का मूल्यांकन, पृ- 154
- डॉ॰ देवेश ठाकुर, प्रसाद के नारी चरित्र, पृ- 149
- मैथिलीशरण गुप्त, व्यक्ति और रचना, पृ- 127
- डॉ॰ देवेश ठाकुर, प्रसाद के नारी चरित्र, पृ- 185
- जयशंकर प्रसाद, कामायनी, पृ- 46
- च्ंजतपबपं ठतंदबंए ॅवउंद पद म्नतंचम ेपदबम 1975ए च् 72
- कबीर, कबीर ग्रन्थावली, पृ- 43

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2022
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanties

- तुलसीदास, रामचरितमानस_ अयोध्याकाण्ड, दोहा संख्या 47
- मैथिलीशरण गुप्त, यशोधरा, पृ- 15
- जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लज्जा सर्ग, पृ- 20
- बिहारी, बिहारी रत्नाकर_ दोहा सं॰-334

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given bymeis not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification/ Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and thereforethe process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything isfound illegal publisher may also take legal action against me

डॉ रेखा रानी